गुब्बारा

[बच्चों के पढ़ने लायक़ कविताओं और चित्रों का ख़ज़ाना]

लेखक

ठाकुर श्रीनाथसिंह

—:*:—

प्रकाशक

'शिशु' कार्यालय,
प्रयाग।

प्रथम बार] १९२८ ई० [मूल्य ।।=)

विषय सूची

पृष्ठ-संख्या

(१) गुब्बारा लो! ... १
(२) दोनों भाई ... ३
(३) कल्लू का घर ... ६
(४) सिंह और घड़ियाल ... ७
(५) जादू की तस्वीरें ... ६
(६) दस छोटे छोटे बाबू ... १४
(७) ओ हो! ... २४
(८) बरात ... २५
(९) भालू महाराज ... २६
(१०) मियाँ अफ़ीमची ... २७
(११) आम ... ३३
(१२) चुन्चू चुन्चू ३४
(१३) मेरी तितली ... ३७
(१४) दद्दा ... ३८
(१५) मचलना ... ३६
(१६) पूसी और कुत्ता ... ४०
(१७) जैसे को तैसा ... ४१
(१८) कैसे पहुँचे? .. ४२
(१९) आँखों का भ्रम ... ४३
(२०) छाया के खेल ... ४३
(२१) बिल्लो रानी ... ४४
(२२) श्रीमती पूसी देवी ... ४६
(२३) पढ़ना ... ४७
(२४) मेरी गुड़िया ... ४८
(२५) लल्लू और मुन्नू ... ४९
(२६) नया खेल ... ५०

चित्र-सूची

चित्र

गुब्बारा लो! [तिरंगा] ...
दोनों भाई ... ...
कल्लू का घर ...
सिंह और घड़ियाल ...
जादू की तस्वीरें ...
दस छोटे छोटे बाबू ...
ओ हो! ... ...
भालू महाराज ...
मियाँ अफ़ीमची ...
चुन्चू चुन्चू ...
मेरी तितली ... ...
दद्दा ... ...
मचलना ... ...
पूसी और कुत्ता ...
जैसे को तैसा ...
कैसे पहुँचे ... ...
आँखों का भ्रम ...
छाया के खेल ...
बिल्लो रानी ... ...
श्रीमती पूसी देवी ...
पढ़ना ... ...
मेरी गुड़िया ... ...
लल्लू और मुन्नू ...
नया खेल ... ...

गुब्बारा

गुब्बारा लो!

कहाँ, कहाँ से ऐ अलबेले!
तू लाया यह गुब्बारा।
बता बता रे ऐ अलबेले!
क्यों लाया यह गुब्बारा?

उड़ा बादलों में जाता है,
तितली की गति दिखलाता है।
परियों की सुन्दर रानी का,
क्या तू मन हरने जाता है?

झाँक चन्द्रमा की खिड़की से,
किसने तुझको चुमकारा।
बता बता ऐ बाल-सलोने!
उड़ा रहा क्यों गुब्बारा॥

ओ हो! क्या तुम नहीं जानते,
सपनों का कल मेला है।
परियों के प्यारे बच्चों का,
चौ-तरफ़ा से रेला है॥

परी-देश से इसीलिए यह,
आया है बेचन-हारा।
बातचीत का समय नहीं है,
गुब्बारा लो गुब्बारा॥

दोनों भाई

दोनों भाई दोनों भाई,
चले सैर को दोनों भाई।
पर देखा जब साँप सामने,
तब बोले—"अब आफ़त आई॥"

"अरे इधर ही वह आता है,
देखो कैसा मुँह बाता है।
अब क्या करें उपाय हाय हम,
कुछ भी नहीं कहा जाता है॥"

आगे बढ़ा साँप काढ़े फन,
उस पर ही दौड़े दोनों जन।
जिन्हें पकड़ने में जल्दी से
फन्दा सा वह साँप गया बन ॥

फिर उस फन्दे में से सर सर,
दोनों निकले बाहर भीतर।
गया जहाँ का साँप तहाँ रह,
कई एक फन्दों में बँधकर ॥

"हमको नहीं पकड़ पाओगे
खुद ही तुम धोखा खाओगे।
गाँठ पड़ी रस्सी से उलझे"
दोनों बोले—"रह जाओगे ॥"

यों खरगोशों की बन आई
नागराज ने मुँह की खाई।
हँसते हँसते घर जाते हैं
देखो बच्चो, दोनों भाई ॥

कल्लू का घर

कल्लू का घर एक बड़े घने जंगल के बीच में है। वह बड़े सवेरे घर से खेलने निकल गया था। खेलते खेलते शाम हो गयी। लौटते समय उसने देखा कि उसके घर को जंगल में हो कर कई रास्ते जाते हैं। वह यह न समझ सका कि किस रास्ते से जाऊ। बेचारा घबरा कर रोने लगा।

बच्चो! ज़रा तुम तो बताओ, वह किधर से जाकर घर पहुँचे?

सिंह और घड़ियाल

धीरे धीरे नदी किनारे,
कुरता पहने बाल सँवारे।
टोपी दिए लगाए छाता,
चला एक लड़का था जाता॥

निकल मगर ने जब मुँह खोला,
बदल गया लड़के का चोला।
फिर भी दौड़ा कदम बढ़ाया,
किन्तु शेर सन्मुख से आया॥

बैठ गया यह मारे डर के,
आड़ खुले छाते की करके।

शेर मगर के मुँह में आया,
यों लड़के ने प्रान बचाया।

फटा मगर का मुँह जाता है,
शेर न बाहर आ पाता है।
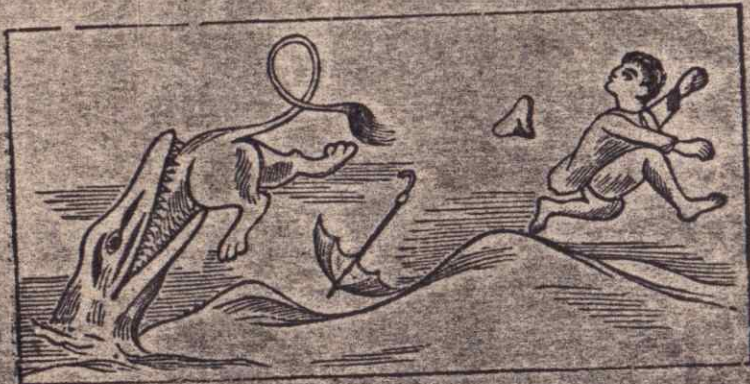
लड़का दौड़ लगाता है अब,
भूल रही टोपी छाता सब॥

जादू की तस्वीरें

गुलाब और गोविन्द दो लड़के थे। दोनों साथ साथ पढ़ते थे। एक दिन दोनों सैर को चले। रास्ते में उन्हें एक घर दिखाई पड़ा। उस में एक आदमी की खोपड़ी जड़ी थी। उसे देख कर गुलाब ने कहा—"शायद यह जादूगर का घर है।"

गोविन्द ने कहा—"हाँ! हाँ! देखो न, सामने जादूगर खड़ा है।"

(चित्र सं० १)

दोनों लड़के इस तरह बातें कर ही रहे थे कि जादूगर ने आगे बढ़ कर कहा—"ओहो! तुम लोग यहाँ कैसे आगए, रास्ते में कोई मिला तो नहीं!"

दोनों लड़के बोले—"नहीं।" जादूगर ने कहा—"वाह! मैं तो अब भी देख रहा हूँ कि चार आदमी—दो लड़के और दो बड़े—यहीं छिपे हैं।" पर गोविन्द और गुलाब को कुछ न दिखाई पड़ा।

बालको ! तुम इस तस्वीर को चारों तरफ से घुमा कर गौर से देखो शायद तुम्हें ये चारों आदमी जो छिपे हैं दिखाई पड़ जायँ। मैंने तो उन चारों को देख लिया है। (देखो चित्र सं० १)

इसके बाद जादूगर ने कहा—"अच्छा, भीतर आओ।" भीतर भी इसी तरह का अजीब खेल था। जादूगार बोला—"इस कमरे में जहाँ आग जल रही है। मेरी दो लड़कियां खेला करती थीं और सामने [illegible] सारी [illegible] यहीं छिपे हैं। क्या तुम उनको देख सकते हो ?"

(चित्र सं० २)

बालको ! मैंने तो इस तस्वीर में उन्हें देख लिया है। तुम भी तो जरा गौर से तस्वीर को चारों तरफ घुमा कर देखो। (चित्र सं० २)

जादूगर दोनों लड़कों को लिए हुए अपने तहखाने में घुसा और कहने लगा—"इसमें मेरा भाई रहता है। उसी के पास इस तहखाने की कुञ्जी है। क्या तुम उसे देख सकते हो ?"

गुलाब ने कहा—"यह रही, कुञ्जी तो मैंने देख ली।"

गोविन्द बोला—"और जादूगर का भाई भी यह रहा, अरे ! इसे देख कर तो डर लगता है।"

बालको ! यदि तुम भी गुलाब और गोविन्द की तरह बहादुर हो तो देखो कि जादूगर का भाई और उसकी कुञ्जी कहाँ है ? (चित्र सं० ३)

फिर जादूगर बन बालकों को ऊपर ले गया और बोला—"खुली खिड़की में से सामने के बगीचे की ओर देखो। कुछ दिखाई पड़ता है ?"

(चित्र सं० ३)

गोविन्द ने कहा—"यह तो बिल्कुल सूना बगीचा है।"

गुलाब ने कहा—"नहीं, मुझे एक लड़की दिखाई पड़ रही है और दो तीन भेड़ें।"

यह सुन कर जादूगर मुस्कुराया और बोला—"होशियार लड़के इन तीनों भेड़ें को और एक लड़की को बात की बात में ढूँढ सकते हैं। अच्छा, चलो

नीचे चलें।" (चित्र सं० ४)

दोनों लड़के जादूगर के साथ नीचे के बैठक—खाने में आए। जादूगर बोला—"यहाँ मेरी दो लड़कियाँ हैं
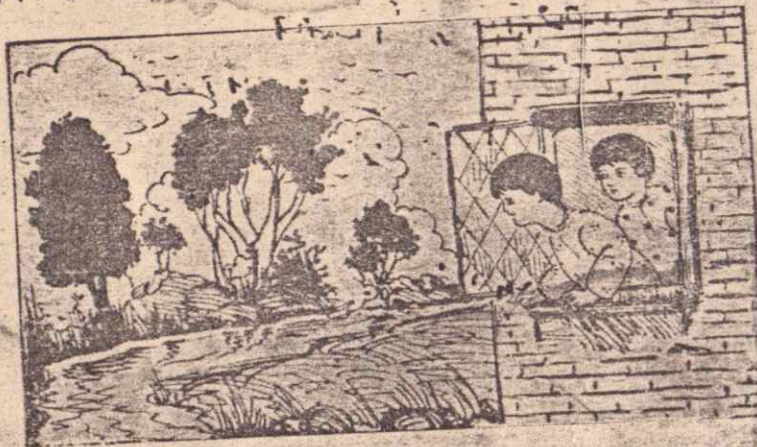
(चित्र सं० ४)
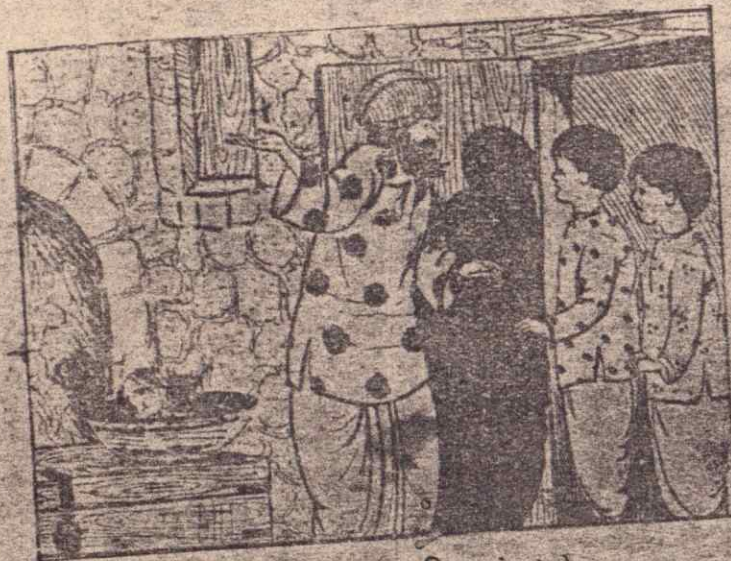
और उनका मामा भी है यह मामा जब अपने सिर पर रकाबी रख लेता है तो लड़कियाँ रूठ जाती हैं। कहो, कोई दि खाई पड़ा ?"

(चित्र सं० ५)

गुलाब ने कहा—"मुझे तो कुछ नहीं दिखाई देता।" "मैं भी कुछ नहीं देखता," गोविन्द बोला।

बालको ! ज़रा तुम भी देखो, पर यह ध्यान रखो कि बिना तस्वीर को चारों तरफ घुमा कर देखे कुछ कह देना अच्छा नहीं है। (चित्र सं० ५)

अब गोविन्द और गुलाब एक नदी पार कर के घर जाने लगे। जादूगर ने कहा—"इस रास्ते में भी बहुत से लोग छिपे हैं। श्रीमान मेंढक जी अपने ब्याह की खुशी

(चित्र सं० ६)

में नाच रहे हैं। मेरा शिकारी कुत्ता उन्हें हड़प जाने की कोशिश में है। पानी में एक बतख खड़ा है और एक बिल्ली उसे देख रही है। शायद तुम लोगों ने भी इन चारों को देख लिया है।"

बालको ! गुलाब और गोविन्द ने चारों को साफ साफ देख लिया है। और हमें विश्वास है कि तुम भी इनको देख लोगे। (चित्रसंख्या ६)

—•—

दस छोटे छोटे बाबू

दस छोटे छोटे बाबू,
चिड़ियों सा कर कल रव ।
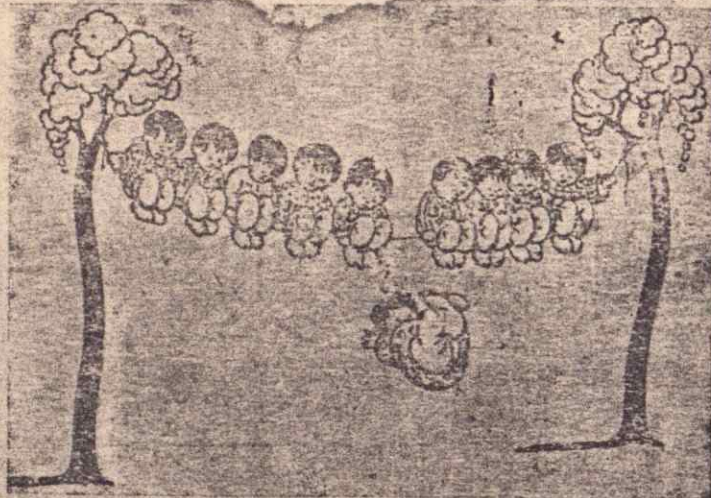
थे झूल रहे रस्सी पर,
इक गिरा--रह गये नव ॥

नव छोटे छोटे बाबू,
फाटक के गिनते काठ ।

इक भगा भेड़ के डर से,
बस शेष रह गये आठ ॥

आठ छोटे छोटे बाबू,
चढ़ मोटर पर दिन रात—
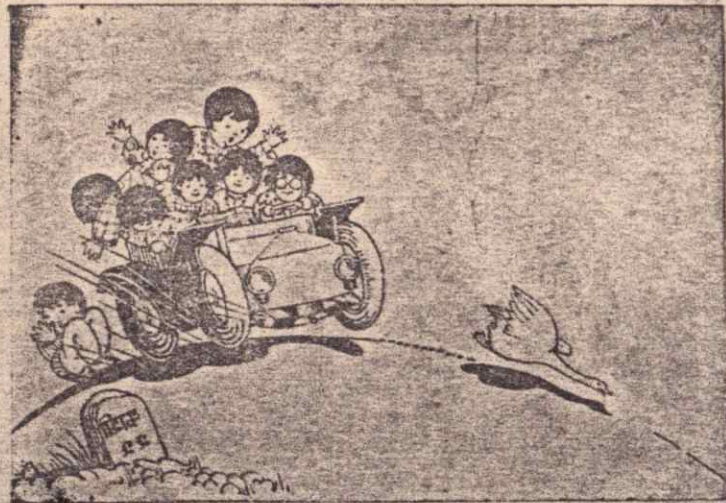
फिरते थे, एक गया गिर,
तब शेष रह गये सात।

सात छोटे छोटे बाबू,
फल चुरा रहे थे, पै—

धर एक लिया माली ने,
तब बाकी थे बस छै॥

छै छोटे छोटे बाबू,

मारें मछली—है साँच।

पर डूबा इक पानी में,

औ' शेष रह गये पाँच॥

पाँच छोटे छोटे बाबू,

छिप देख रहे थे द्वार।
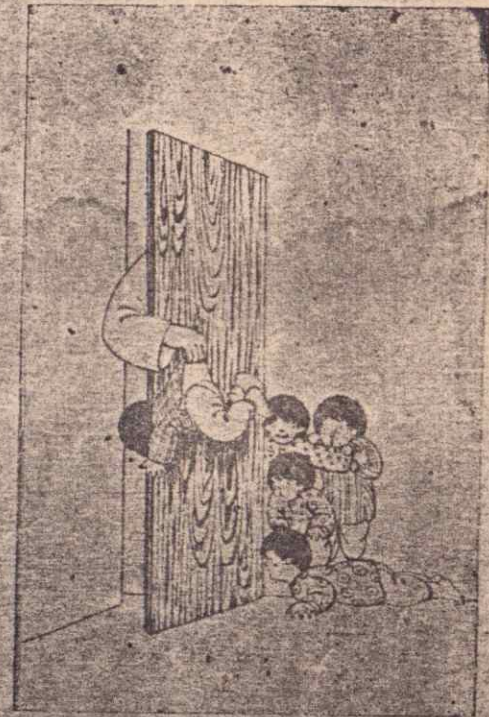
इक छिपे हाथ ने पकड़ा,

तब शेष रह गये चार॥

चार छोटे छोटे बाबू,
लख घोड़ा बढ़े नवीन।

चढ़ एक उसी पर भागा,
तो शेष रह गये तीन॥

तीन छोटे छोटे बाबू;
लख बतख कह उठे—"हो!"
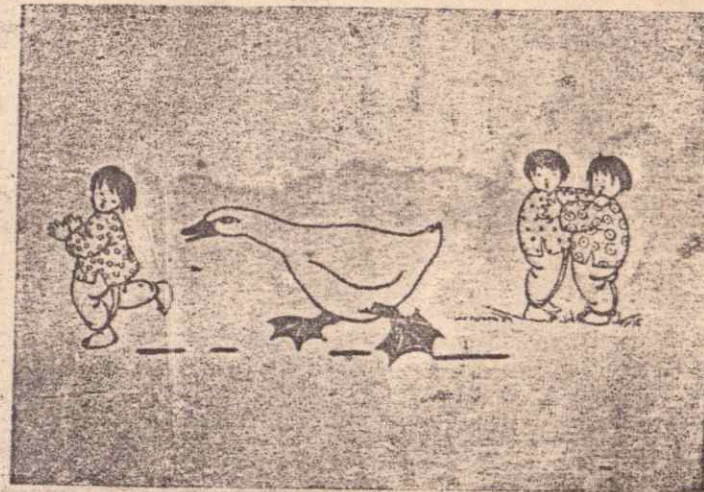
इक पड़ा उसी के पाले,
तो शेष रह गये दो॥

दो छोटे छोटे बाबू,
थे लखते कुएँ अनेक।
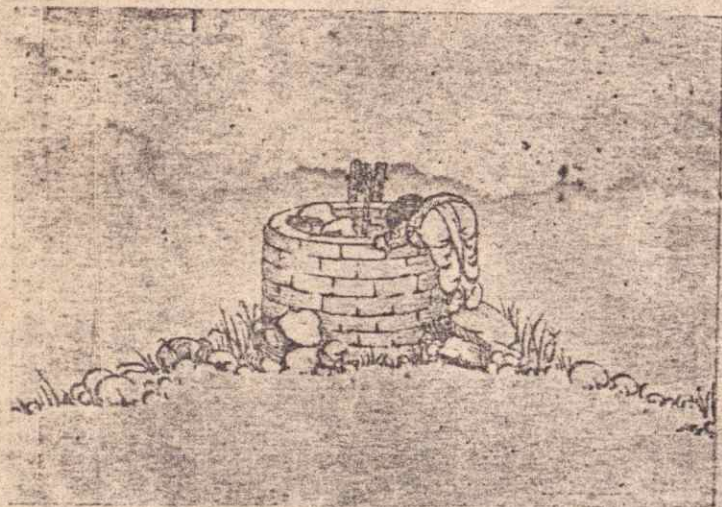
इक उलटा गिरा किसी में,
तो शेष रह गया एक।

इक छोटे छोटे बाबू,
ने ली जंगल की राह॥

मैं कैसे तुम्हें बताऊँ ?
अब रहा न कोई आह !!

ओ हो !

खेलने की है मन में चाह।
गेंद पर क्या बैठे हैं, वाह !

बरात

मुन्नू मुन्नू आजा आजा !
बजने लगा द्वार पर बाजा ॥
पीं पीं चीं चीं ढम-ढम-ढम-ढम ।
खिड़की पर से देखेंगे हम ॥

ओ हो आतिशबाज़ी छूटी ।
फुलवारी सी नभ में फूटी ॥
ऊँचा खूब उठा गुब्बारा ।
हो मानों वह लाल सितारा ॥

हाथी घोड़े ऊँट खड़े हैं ।
जिन पर लोग चढ़े अकड़े हैं ॥
दिखलाई देते हैं ऐसे ।
मेले की हों चीज़ें जैसे ॥

हुई रोशनी कैसी भाई ।
चकचौंधी आँखों में आई ॥
कई कई परछाईं लेकर ।
चलते हैं सब चकित हमें कर ॥

चारों तरफ़ मची है हलचल।
अम्मा ! ज़रा सड़क पर तो चल॥
देखें कैसे दूला आया।
कैसा उसने मौर बँधाया॥

भालू महाराज

मुक़दमा जीत गये हैं आज।
खड़े हैं यथा भालू महराज॥

मियाँ अफ़ीमची

चढ़ा ऊँट पर देखो बच्चो !
कौन भगा यह जाता है।
सिर है कहाँ, कहाँ है सूरज,
कहाँ लगाया छाता है ?
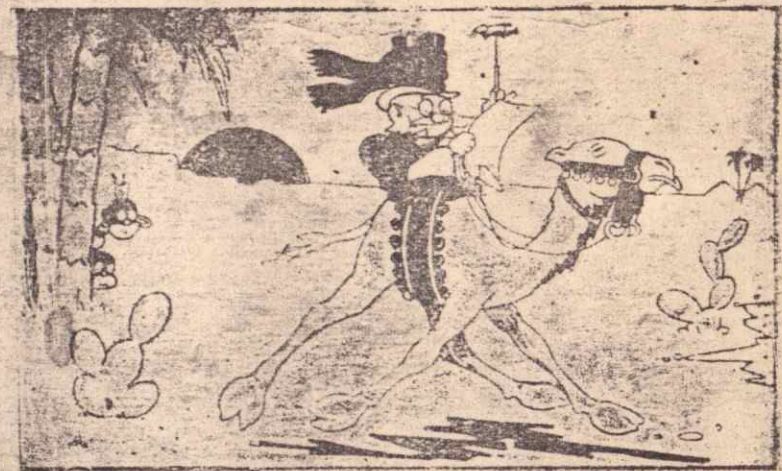
[मियाँ अफ़ीमी जा रहे है]

अकल चाटने में दुनिया की,
हैं ये दीमक से बढ़कर।
अपनी चाल बदलते हैं नित,
हाल ज़माने का पढ़कर॥

ये भी फैशन सीख गये हैं,
लखकर नये ज़माने को।
टोपी ऐनक मँगा लिया है,
घड़ी रही मँगवाने को॥

अखबारों का पढ़ना भी,
फैशन है नया, बताते हैं।
इसीलिये अख़बार सामने,
छिपे सफ़र को जाते हैं॥

कहते इनको 'मियाँ अफ़ीमी',
मनों अफ़ीम उड़ाते हैं।
पाकर मौक़ा चतुर लुटेरे,
इनको सदा छकाते हैं॥

जाते हैं बग़दाद आज ये,
एक बड़ा लेकचर देने।
सोच रहे हैं—"मुझे शहर के,
आएँगे अमीर लेने॥"

छिपे ताड़ में तीन लुटेरे,
हैं ऐसा मौक़ा तकते।
किसी तरह यह ऊँट चुरा लें,
रहे अफ़ीमी जी झखते॥

चार लकड़ियां लेकर तीनों,
बस उनके पीछे धाये।

इधर पिनक में मियाँ अफ़ीमी—
जी पढ़ते पढ़ते आये॥

[चुपके चुपके तीनों पहुँचे लिये लकड़ियाँ पास तभी]

ऊँट खड़ा हो गया, चलाना,
गए मियाँ जी भूल जभी।
चुपके चुपके तीनों पहुँचे,
लिये लकड़ियाँ पास तभी॥

काठी में लग गये काठ के,
छिन में चार नये पाये ।
ऊँट हाँक कर चुपके से,
बस तीनों पीछे को धाये ॥

[काठी में लगगये काठ के छिन में चार नये पाये]

बच्चों देखो ऊँट लिये क्या,
चोर मज़े में जाते हैं ।
लकड़ी के मचान पर बैठे,
कोड़े मियाँ उड़ाते हैं ॥
पर लकड़ी का ऊँट जहाँ,
अड़ गया वहीं पर अड़ता है ।

कोड़े मार मियाँ बोले—
क्यों चलता नहीं अकड़ता है ?
इस हिलने डुलने में लकड़ी,
एक गिरी नीचे आई ।
छाता छूटा, काग़ज़ छूटा,
घबड़ा गये मियां भाई ॥
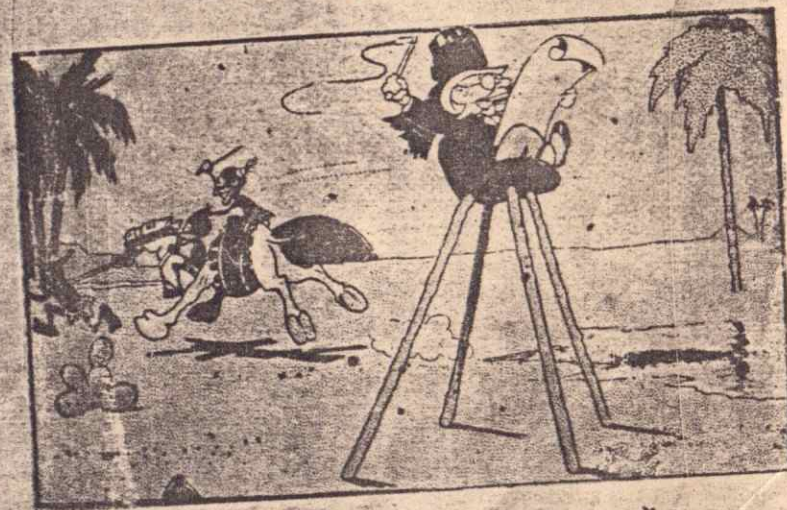
लकड़ी के मचान पर बैठे कोड़े मियाँ उड़ाते हैं]

चारो खाने चित्त गिरे,
काठी का टोप लगाया है ।
सोच रहे हैं किसने कब,
औ" कैसे ऊँट चुराया है ॥

कहाँ गिरा हूँ कोई मुझको,
तो आकर के बतलाओ।
ऊँट लिया है तो सिर से,
यह काठी भी लेते जाओ॥
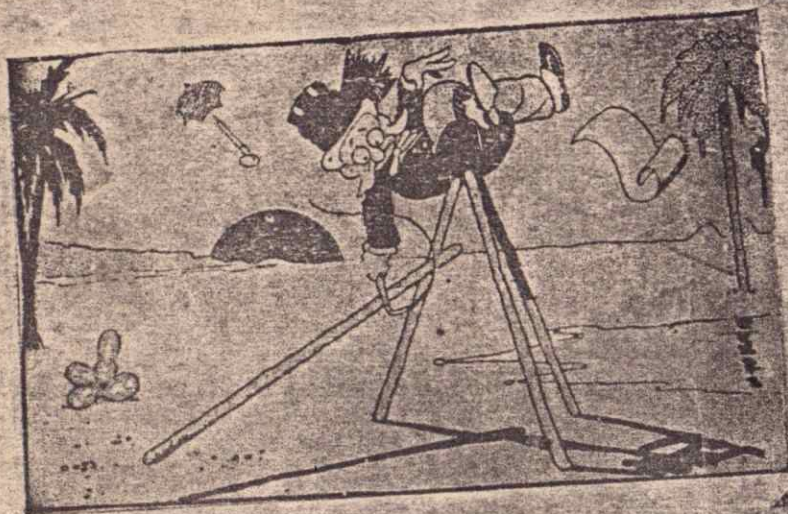
[इस हिलने डुलने में लकड़ी एक गिरी नीचे आयी]

अखबारों में समाचार यह,
देखो कौन छपाता है।
ऊँट गया अब प्रान,
मियाँ का भी ऊसर में जाता है॥

एक रोज़ चाहा दोनों ने,
उस थैले को काटा।
धरा तिपाई पर था,
जिसमें भरा हुआ था आटा॥
देखें कौन काट देता है,
इस थैले को पहले।
सोच सोच वे दोनों भाई,
एक साथ ही उछले॥
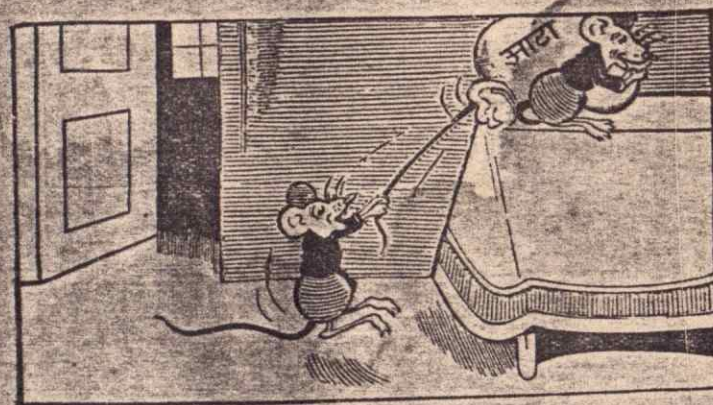
चुचू तो चढ़ गया किन्तु,
बुबू न सका जा ऊपर।
उसने सोचा चुचू को भी,
क्यों न खींच लूँ भूपर॥
लटकी थी नीचे को डोरी,
थैले के फन्दे की।

खींचा उसको बुचू ने कह—
जीत हुई बन्दे की ॥
बात हुई यह, डोरी को था,
चूचू की दुम जाना ।
खींच उसे चाहा था उसने,
उसको खूब छकाना ॥

किन्तु हुआ कुछ का कुछ ज्योंही
फन्दा खुलकर सरका ।
जल की मोटी धार की तरह,
आटा उस पर ढरका ॥
नाक, कान, मुँह गया सभी भर
छका आप ही बुचू ।
अरे हुआ क्या तुमको भाई,
चूँ चूँ बोला चुचू ॥

आपस में ही अगर करोगे,
तुम ऐसी चतुराई ।
पछताना होगा ऊपर से,
लोग हँसेंगे भाई ॥

मेरी तितली

बस्ता बिखरा, छतरी छूटी ।
सुधबुध सब तितली ने लूटी ॥

दद्दा

छिन छिन पर माँ दूद पिलाती ।
छिन छिन पर मूँ हात धुलाती ॥
ऊँ ऊँ मैं न लहूँगा घल में ।
दद्दा लिवा चलो दफ्तल में ॥

मचलना

'ऊँ ऊँ' क्यों करते हो भैया ?
लेंगे नहीं तुम्हारी गैया ॥

पूसी और कुत्ता

न डर पूसी तू रह चुपचाप।
भूँक कर चला जायगा आप॥

जैसे को तैसा

था कल्लू शैतान अनोखा।
देता फिरता सबको धोखा॥
एक रोज़ की सुनो कहानी।
की कैसी उसने शैतानी॥

चढ़ बैठा गैंडे के ऊपर
बाँध सींग में फूल मनोहर।
बोला—मुझे घुमा लावेगा।
लालच में बढ़ता जावेगा॥
पर गैंडा था बड़ा सयाना।
सहन नहीं था उसे न काना॥

या पिछली टाँगों पर।
ो फूल लिया मुँह में भर॥
गिरा कल्लू चिल्लाया।
आँखों में आँसू भर आया॥
गिरा पड़ा है कैसा॥
दण्ड मिला जैसे को तैसा॥
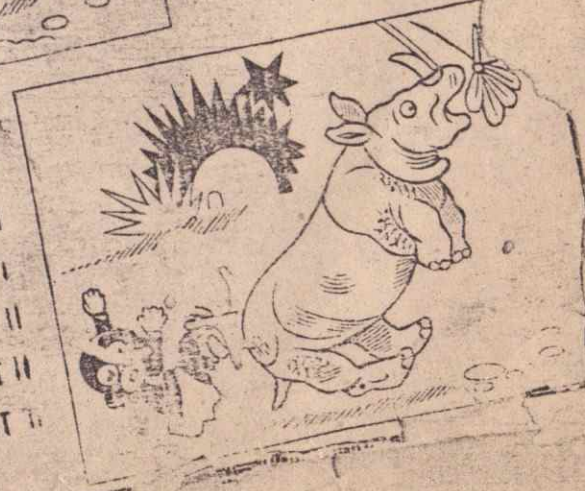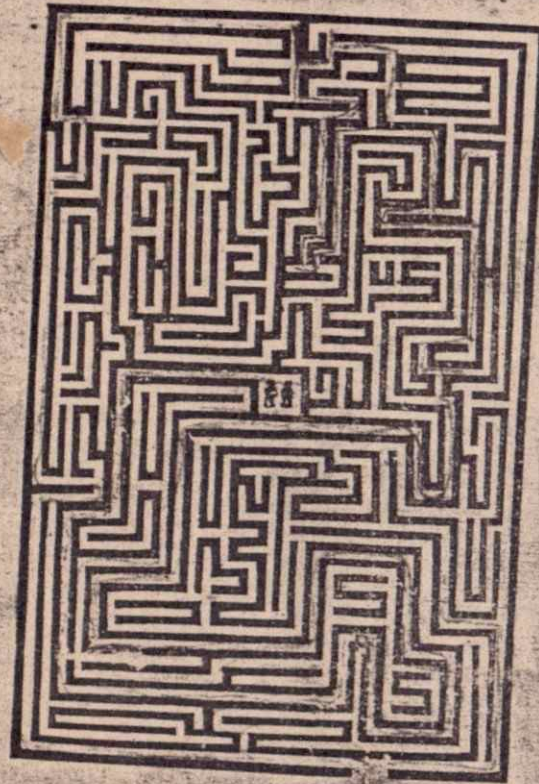
कैसे पहुँचे ?

ये दो लड़के इस भूल भुलैंया के भीतर पहुँच गये हैं। बताइये अगर आप होते तो बिना दिवाल पार किये [illegible] कैसे पहुँचते

क्यों करती है म्याऊँ म्याऊँ।
क्या मैं चला यहाँ से जाऊँ॥

आँगन में घर में छप्पर पर।
देखा तुझे लगाते चक्कर॥
पेड़ों पर भी चढ़ जाती तू।
नहीं पकड़ में है आती तू॥

सीख अगर यह मैं भी जाता।
तो मुन्नी को ख़ूब छकाता॥
मैं भगता वह पकड़ न पाती।
हाथ जोड़ तब मुझे बुलाती॥

आ! आ! दूध पिलाऊँ तुझको!
जो खा ख़ूब खिलाऊँ तुझको॥
तुझे कहूँगा बिल्लो रानी।
सुनना घर में बैठ कहानी॥

साथ हमारे चलकर पढ़ना।
वहाँ न पर छप्पर पर चढ़ना॥
नहीं गुरुजी चिढ़ जायँगे॥
तुझे पीटने को धायेंगे।

———

श्रीमती पूसी देवी

अपने पिता जी को चिट्ठी लिख रही हूँ। अपने लिए
बर का चूहा मँगाया है। बोलो, तुम्हारे लिए क्या मँगाऊँ

पढ़ना

ता रहता हूँ दिन रात।
नी पड़ती तब भी बात॥

गुब्बारा

मेरी गुड़िया

सम्मुख देखो मुँह मत खोलो।
खड़े रहो औ हिलो न डोलो॥

अपने
रबर का चूह